डॉ॰शिवाजी विष्णु निकम
एम॰ए॰पीएच॰डी॰
स्नातकोत्तर अध्यापक एवं
शोध-निर्देशक, हिन्दी विभाग,
छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा॰
(महाराष्ट्र)॰

प्र मा ण प त्र

मैं डॉ॰शिवाजी विष्णु निकम, स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध-निर्देशक, हिन्दी विभाग, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा यह प्रमाणित करता हूँ कि, प्रा॰ सविता राजाराम भिंगे ने शिवाजी विश्व विद्यालय, कोल्हापुर की एम्॰फिल॰ (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध "अज्ञेय के "अपने अपने अजनबी" उपन्यास का अनुशीलन" मेरे निर्देशन में बड़ी परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही है। मैं॰ प्रा॰ सविता राजाराम भिंगे के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

सातारा
दिनांक :- 14/5/97

हस्ताक्षर
डॉ॰शिवाजी विष्णु निकम
निर्देशक

अनुशंसा

हम अनुशंसा करते हैं कि, प्रा॰सविता राजाराम भिंगे का लिखा हुआ लघु-शोध-प्रबंध, एम्॰फिल्॰ (हिन्दी) के परीक्षणार्थ सादर अग्रेषित।

प्रा॰जयवंत जाधव
हिन्दी विभाग प्रमुख,
लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज,
सातारा (महाराष्ट्र)

पुरुषोत्तम शेठ
प्राचार्य
लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज,
सातारा (महाराष्ट्र)
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज,
सातारा.

परीक्षणार्थ अग्रेषित

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर – ४१६ ००४

प्रस्थापन

अज्ञेय के "अपने अपने अजनबी" उपन्यास का अनुशीलन

यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्·फिल्· के लघु-शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

सातारा

दिनांक : 14/5/97

14/5/97
हस्ताक्षर

प्रा·सविता राजाराम भिंगे
अनुसंधाता

भूमिका

"अज्ञेय" छायावाद के बाद हिन्दी साहित्य के सर्वाधिक चर्चित और विवादास्पद रचनाकार हैं। "अज्ञेय" का हिन्दी साहित्य को महत्त्वपूर्ण योगदान है। आपने काव्य संकलन, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि विविध क्षेत्रों में अपने पांडित्य एवं प्रतिभा का परिचय दिया है। उन्होंने अपने "अपने अपने अजनबी" उपन्यास के माध्यम से हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अस्तित्ववादी विचारधारा को जन्म देकर एक नये युग का सूत्रपात किया। "अपने अपने अजनबी" हिन्दी साहित्य में अज्ञेय का प्रथम आधुनिक और अस्तित्ववादी उपन्यास है। "नदी के द्वीप" उपन्यास के लेखन के बाद अज्ञेय का झुकाव कीर्केगार्द, सार्त्र, यास्पर्स ब्यूबर आदि अस्तित्ववादी दार्शनिकों की विचारधारा की ओर बढ़ने लगा। मनुष्य स्वयं अपनी नैतिकता, अपनी नियति, अपनी स्वतंत्रता के क्षण का चुनाव करता है, यह विचार और भी प्रबल रूप से उनके उपन्यास "अपने अपने अजनबी" में स्पष्ट हुआ है।

"अपने अपने अजनबी" आज की समस्त आधुनिकता एवं पौर्वात्य तथा पाश्चात्य की मृत्यु संबंधी धारणाओं को अभिव्यक्त करने में बेहतर साबित हुआ है। "अज्ञेय" की साहित्य-वस्तु प्रेरणा का स्त्रोत समाज का जो वर्ग बनता है, उसी वर्ग के जीवन नियम, आचरण, रीतियाँ, समस्याओं और धारणाओं आदि का चित्रण उनके साहित्य में मिलता है। "अज्ञेय" के उपन्यास साहित्य में आधुनिक युग का यथार्थ और पूर्ण प्रतिबिंब दिखाई देता है।

"अपने अपने अजनबी" के माध्यम से "अज्ञेय" की एक नई रचना पध्दति का विकास हुआ है। उन्होंने इसके द्वारा एक नया संदर्भ, सहज भाषा तथा रूढ़ियों के विद्रोह की चेतना प्रदान की है। साथ ही बौध्दिक और सामाजिक चेतना प्रदान की है।

"अज्ञेय" के "अपने अपने अजनबी" उपन्यास के नाम से ही यह उपन्यास पढ़ने की जिज्ञासा मेरे मन में उत्पन्न हो गई। उसी के अनुसार मैंने यह उपन्यास आद्यन्त पढ़ा। लेकिन ठोस रूप से कोई भी बात इसमें मुझे नजर नहीं आयी। मुझे पदव्युत्तर पढ़ाई से ही अस्तित्ववाद क्लिष्ट लगता था। अस्तित्ववाद इस विषय में मुझे विशेष रूचि नहीं थी। लेकिन मेरे आदरणीय गुरूवर्य डॉ॰निकमजी ने मुझे यह विषय किस प्रकार से सुलझा जा सकता है यह बताया। साथ ही अस्तित्ववाद का महत्त्व मेरे सम्मुख विशद किया। इस विषय के बारे में उन्होंने अभिरूचि उत्पन्न की। साथ ही अस्तित्ववाद का अध्ययन एक प्रकार का आव्हान साबित हो सकता है यह भी बताया।

गुरूवर्य डॉ॰निकमजी के प्रोत्साहन तथा मार्गदर्शन के कारण ही मैं आज मेरा यह शोध-कार्य समुचित एवं संतुलित संशोधन के रूप में प्रस्तुत कर चुकी हूँ। उन्हीं की वजह से अस्तित्ववाद क्या है? "अपने अपने अजनबी" उपन्यास में अस्तित्ववादी जीवनदर्शन किस प्रकार से चित्रित किया हुआ होगा? यह जॉनने की जिज्ञासा मेरे मन में उभर उठी। उसी वक्त मैने "अपने अपने अजनबी" का विस्तृत अध्ययन करने का निश्चय किया। और प्रस्तुत विषय मैंने अपने अध्ययन का क्षेत्र चुना हैं।

छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा के डा॰शिवाजी निकम की प्रेरणा, शुभाशंसा, प्रोत्साहन तथा विद्वतापूर्ण निर्देशन का प्रतिफल यह शोध-कार्य हैं। पग-पग पर मुझे उनका मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन मिलता रहा है। अतः उनके प्रति मैं सदा ऋणी रहूँगी।

इस शोध-संकल्प की पूर्ति में जिनसे मुझे प्रोत्साहन मिला उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना मैं अपना पूनित कर्तव्य मानती हूँ। आदरणीय गुरूवर्य प्राचार्य आर·डी·गायकवाड साहब और प्रा·डॉ·सौ·गायकवाड मॅडम का निर्देशन तथा प्रोत्साहन मेरे लिए बहुत अधिक मूल्यवान है। उनकी ज्ञान-गरिमा ने मुझे यह शोध-कार्य संपन्न करने की प्रेरणा दी।

छत्रपति शिवाजी कॉलेज के आदरणीय प्राचार्य मा·के·यादवजी की प्रेरणा तथा सहयोग मेरे लिए महत्त्वपूर्ण रहा है। लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय के आदरणीय प्राचार्य पुरूषोत्तम शेठ तथा इस महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रा·जयवंत जाधवजी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। जिन्होंने मुझे निर्देशन, पुस्तकीय सहायता-सामग्री संवर्धन में सहयोग दिया है।

मेरे इस लघु-शोध-प्रबंध को पूरा करने में मेरे आदरणीय गुरूवर्य छत्रपति शिवाजी कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रा·एस·डी·आढावजी का सहयोग मेरे लिए बहुत अधिक मूल्यवान है, जिसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती।

मेरे परमपूज्य पिताजी स्वर्गीय राजाराम भिंगे उनकी अपार इच्छा के कारण मैं मेरा यह शोध-कार्य सफल कर सकी हूँ। मेरी परमपूज्य माताजी श्रीमती इंदूमती भिंगेजी का प्रोत्साहन मेरा प्रबंध पूरा करने के लिए प्रेरणादायी रहा है। उसी की अपार इच्छा तथा सहयोग के कारण ही मैं मेरा यह कार्य सफल कर सकी हूँ। मेरे आदरणीय परमपूज्य माता तथा पिता के प्रति मेरी अपार श्रध्दा विनयागत है।

जिनके प्रति मेरी अपार श्रध्दा विनयागत है वे मेरे परमपूज्य ससुरजी श्री·गंगाधर मेनकुदले और सास सौ·नर्मदा मेनकुदले उनकी भी मैं ऋणी हूँ। उनके सहयोग के बिना यह कार्य पूरा नहीं हो सकता था।

इस लघु-शोध-प्रबंध को पूरा करने में सबसे बड़ा सहयोग मेरे प्रिय पति प्रा·शिवलिंग मेनकुदलेजो ने दिया है। उनके निर्देशन तथा सहयोग के कारण ही मैं यह प्रबंध पूरा कर सकी। उनके सहयोग का मेरे लिए बहुत अधिक मूल्य है जिसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती। यह भी तय है कि इस सहयोग के बिना यह कार्य पूरा नहीं हो सकता था।

साथ ही मेरे प्रिय पुत्र चि·शेखर ने तो इस लेखन में मुझे बहुत ही अधिक सहयोग दिया है। जिसकी वजह से यह शोध-कार्य आज यहाँ प्रस्तुत है।

इस लघु-शोध-प्रबंध में मेरे प्यारे भाई चि·जयंत तथा बहनें सुश्री ललिता और सुश्री अनिता का सहयोग भी मेरे लिए महत्त्वपूर्ण रहा है। मेरी बहन सुश्री ललिता ने मुझे इस शोध-कार्य के लेखन में सबसे ज्यादह सहयोग तथा प्रोत्साहन दिया है।

इस प्रबंध को पूरा करने में मेरे देवरजी चि·गुरूलिंग, चि·बालू और चि·अनिल का प्रोत्साहन तथा सहयोग भी मेरे लिए महत्त्वपूर्ण रहा है।

छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा के ग्रंथपाल तथा उनके सहयोगियों का शुक्रिया अदा करना मैं अपना कर्तव्य मानती हूँ।

जिनसे मैंने किसी-न-किसी रूप में सामग्री ग्रहण की है, उन सभी लेखकों की पुस्तक रचनाओं की मैं आभारी हूँ।

इस लघु-शोध-प्रबंध को अत्यन्त तत्परता से और सूचीपूर्ण टंकन-लेखन करनेवाले **"रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा"** के श्री·मुकुन्द ढवले, सुशीलकुमार कांबले और राजू कुलकर्णी धन्यवाद के पात्र हैं।

14/5/97

प्रा·सविता राजाराम भिंगे

अनुसंधाता